आपातकाल
में
सृजन फुलवारी

विभा रानी श्रीवास्तव 'दन्तमुक्ता'

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

विभा रानी श्रीवास्तव "दन्तमुक्ता"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-185-5
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www-antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, विभा रानी श्रीवास्तव
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY VIBHA RANI SHRIVASTAV "DANTMUKTA"

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुजर रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (COVID19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय श्समकित सुरानाश् से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय "संदीप सोनी" ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सजा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	सौ सयाने एक मत-हिन्द का कुनबा	6
2.	निरभिलाष	7-8
3.	वक्त बदल गया	9
4.	बलि	10
5.	किनारों पर वापसी	11
6.	मीन की आँख	12
7.	नेकी की मूर्ति	13
8.	छल	14-15
9.	वशीकरण	16
10.	आग का छल्ला	17
11.	तम छटा	18
12.	धीमा जहर	19
13.	साहित्य का बढ़ता चीर	20-21

सौ सयाने एक मत-हिन्द का कुनबा

"अरे! यह मैं क्या सुन रही हूँ, यूएसए! तुमने घोषणा किया है कि तुम्हारे जो बच्चें विदेशों में बस रहे हैं, वे अभी वापस आ जाएं तो ठीक है, नहीं तो तुम बाद में अपने घर में प्रवेश निषेध करोगे..। अभी तुम ऐसा कैसे कर सकते हो..? तुम अपने घर में लॉकडाउन क्यों नहीं लागू कर लेते?"

"हाँ! हिन्द माते तुमने बिलकुल ठीक सुना है। हमारे घर में सोशल डिस्टेंस मेंटेन किया जा रहा है...। उड़ाने रद्द नहीं है तो अभी आ जाना सबके लिए आसान होगा...।"

"तुम समझ नहीं रहे हो.. बाहर से आने वालों की जितनी भीड़ बढ़ेगी, उतनी..."

"तुम मुझे समझाने चली हो..! तुम! पैंतालीस साल पहले तुम्हारे यहाँ एक फ़िल्म आई थी.. अच्छा-भला तो नाम था उसका,. अरे हाँ! खुशबू! तुम्हारे बच्चों को शायद याद हो...। छोड़ो जाने दो.. कहाँ याद रह जाता है अतीत.. सौ-पचास साल पुरानी बातें...। लगभग पच..........!

निरभिलाष

"हम क्यों चाहते हैं हमारे किये हर कार्य पर दूसरे मोहर लगाएं या उन बातों की आलोचना कोई ना करें ...?"

"क्या हो गया क्या बड़बड़ा रही हो.. स्पष्ट बोलो तो कुछ बातें समझ में भी आये..!" बहुत देर से अपनी दीदी को हल्के दबे स्वर में बुदबुदाते देखकर निमिषा ने कहा।

"भला ई भी कोई बात हुई... जिस समय सभी को सबसे ज्यादा जरूरत ईश्वराश्रय की है। बताओ वैसे समय में देवालय जाने पर पाबंदी लगा दी जाए.. जनता में आक्रोश फैलेगा कि नहीं?"

"तब तो मंदिर में जाने के इच्छुक को किसी और स्थान के लिए बंदी का समर्थन नहीं करना चाहिए? और जरा तुम मुझे समझाओ आस्था क्या है?"

"उस शक्ति पर विश्वास करना जिसके हाथों में हमारे साँसों का डोर है.. ,"

"वो तो कोई एक ही शक्ति होगी न और हम अभी जहाँ खड़े हैं वहाँ विद्‌यमान है.. फिर यह छतीस कोटि और एक ही देवता के अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग मंदिर तो अलग-अलग राज्यों से जुटी भीड़.. क्या है यह.. चलो छोड़ो ! आज एक सुनी आओ तुम्हें भी सुनाती हूँ...

"किसी ज़माने में एक शिव भक्त था जो नियमित शिव मंदिर जाता और मंदिर का मूर्ति का परिक्रमा करता तब अपने कामों में जुटता। यह क्रम वर्षों से चलता आ रहा था लेकिन उसकी स्थिति बदल नहीं रही थी..! वह निर्धन था तथा निर्धनता से जूझता वह परेशान भी रहता था। उस पर आश्रित उसका परिवार था।

उसकी गरीबी से, उसके परेशानियों से माता पार्वती व्यथित होती रहती थीं और विचलित होकर बार-बार भगवान शिव से अर्जी लगाती रहती थीं कि,- "आपकी कृपालुता इस भक्त पर क्यों नहीं दिखलाई देती है? सभी जानते व मानते हैं कि आप शीघ्र प्रसन्न हो जाने वाले ईश हैं।

भांग-धतूरा-बेलपत्र चढ़ाकर आपको झट से मनोवांछित फल प्राप्त किया जा सकता है। इस भक्त की भक्ति तो छोड़िए आप मेरी इच्छा भी अनसुनी कर देते हैं... आखिर क्यों?"

हर बार भगवान शिव माता पार्वती की बात बड़े धैर्य से सुनते और मुस्कुराते हुए उत्तर देते,-"देवी! मैं विवश हूँ! इसका जो कर्म और भाग्य है उसमें इसे धनवान बनना लिखा ही नहीं है। मैं चाहकर भी इसकी कोई मदद नहीं कर सकता हूँ।"

इस तरह कई बार माता पार्वती के समझाने पर मानो उनके जिद के आगे हारकर एक दिन भगवान शिव बोले,-"ठीक है जब आप इतना जोर दे रही हैं तो आज धन से भरा कलश उस भक्त के राह में रख देते हैं। उस धन से उसकी निर्धनता दूर हो जाएगी।"

इधर भक्त जब शिव मंदिर की जा रहा था तो उसके मन में विचार आया कि मेरी आँखों की रौशनी किसी वजह से किसी दिन जा सकती है। जब मेरी आँखों की रौशनी चली जायेगी तो मैं परिक्रमा कैसे कर पाऊँगा.., आज से ही अभ्यास शुरू कर देता हूँ..,"

"बस! बस! तुम मुझे जो समझाने की कोशिश कर रही थी वो मैं समझ गई!"

"तब ठीक है दीदी! मंदिर मस्जिद गिरजाघर, गुरुद्वारा जलसा समोरोह बन्द करने के पीछे के उद्देश्य को सभी समझें...।

अगर आस्था है तो घर बैठे उस शक्ति को याद करें.. आज के समय में... हमें सलाम हर देश के चिकित्सकों को तथा चिकित्सा से जुड़े हर इंसान को करना चाहिए... इस विश्व युद्ध में मुख्य बात है किसी देश की हार/जीत से किसी खास देश को लाभ/हानि नहीं पहुँचने वाली।"

"जिंदगी से हम जब भी ...सा, रे, ग, म सीखने के लिए प्रयत्नशील होते हैं।

वो हमें उलझते देखने में जुटी रहती, "सारे गम" को लेकर।

वक्त बदल गया

"हाथ ठीक से धो लो माया..., जब खाने की चीज उठाओ..," लैपटॉप-मोबाइल खाने के मेज पर रखकर work at home करती माया जब नाश्ते के लिए फल उठा रही तो मैंने उसे टोका.. केला खाकर उसी हाथ से स्प्रिंग रोल का डिब्बा खोलने लगी तो फिर टोक दिया।

"माँ! आप साफ-सफाई कैसे करें, स्वच्छता कितना जरूरी है? जो आप वर्षों से करती रहीं.. सबको कहती रहीं। आज सभी मान रहे हैं। इसका वीडियो बनाकर डालिये न... वायरल होगा..। सालों से सब आपको साइको कहते थे...। आज पूरा विश्व साइको है क्या...!"

महबूब कहते थे,- "माँ सबको कितना हड़का के रखती है.. जब देखो सबपर चिल्लाते रहते रहती है.. सब डरे-सहमे रहते हैं..,"

आप कहती थीं कि -"तुम तो कभी नहीं डरते सबसे ज्यादा तो तुम्हें ही मेरा सामना करना होता है?"

फिर वो कहते थे, -"वो क्या है न शेरनी के बच्चों को शेरनी से डरते नहीं पाया जाता!" और

"हँसते-हँसते हम सब मज़ाक में बात हवा में उड़ा देते थे..!"

"कोई बात नहीं आओ तुम्हें एक बिहारी कहावत सुनाती हूँ, कूड़े के दिन भी बहुरते हैं...!"

"सच कहा, कभी नाव पे गाड़ी कभी गाड़ी पे नाव।"

बलि

कोई रात ऐसी नहीं गुजरती थी, जिस रात उसे स्याह अनुभव ना होता हो। स्याह अनुभव शायद होता नहीं भी हो। क्योंकि विक्षिप्तावस्था में कैसी अनुभूति।

"एक कट्ठा जमीन मेरे नाम से कर दीजियेगा तो मैं आपकी बेटी को अपने साथ रखने के तैयार हूँ; वरना मैं चला, आप अपनी बेटी को अपने पास रखिये।

उसके पति की कही बातों पर नीरा के पिता कोई जबाब देते ; उसके पहले उसकी भाभी चिल्ला पड़ी :- शादी के इतने सालों के बाद धमकी देने से हम डरने वाले नहीं हैं। आपको नीरा को ले भी जाना होगा और हम जमीन देने वाले भी नहीं, आप ही एक दामाद नहीं घर में। अभी एक और मेरी ननद की शादी करनी बाकी है। कल मेरी भी बेटी सयानी होगी। जमीन नहीं दी जायेगी तो नहीं दी जायेगी।

जमीन नहीं दिए जाने के कारण मायके में ही रहना पड़ा नीरा को।

जब तक नीरा के माँ बाप जिन्दा रहें, नीरा का पेट भरता रहा। माँ बाप के मृत्यु के बाद उसे उसी शहर के मन्दिर में आश्रय लेना पड़ा। समृद्ध घर के मालिक के पास सैकड़ो एकड़ जमीन थी।

किनारों पर वापसी

"इतनी सारी पुस्तकें एक साथ/एक बार में आपने निर्गत (issue/इशु) करवा लिया?" पुस्तकालय में अध्ययनरत इशिका का ध्यान बरबस नब्बे-सौ पुस्तकों के ढ़ेर के साथ लगभग पाँच-छ साल की बच्ची अपने अभिभावक के साथ खड़ी ने आकर्षित किया तो इशिका का सवाल पूछना स्वाभाविक हो गया।

"जी! मेरी बेटी को पढ़ना बहुत पसंद है साथ में विद्यालय से लगभग पाँच-छः महीने की छुट्टियों के लिए गृह कार्य मिला हुआ है।"

"क्या पाँच-छः महीनों के लिए भी इतनी पुस्तकें कुछ ज्यादा नहीं है?" अचंभित थी इशिका।

"अरे! नहीं... बिलकुल ज्यादा नहीं है। इतनी पुस्तकें तो यह एक महीने में पढ़ लेती है। विद्यालय से गृहकार्य मिला है, दो पुस्तकों को लेकर समुन्दर के किनारे बैठकर पढ़ें और छुट्टी खत्म होने के बाद कक्षा में पूरे अनुभव को सबसे साझा करें। पुस्तकालय में इंट्री फ्री और पुस्तकें मुफ्त में मिल जाने से हम अभिभावकों को बहुत सुविधा हो जाती है।"

"ग्रेट! काश भारत में भी यह लहर चलती और बचपन को असामयिक नष्ट होने से बचाया जा सकता।" इशिका कुछ करने की योजना सोच रही थी जब वह भारत वापसी करेगी।

मीन की आँख

"अच्छी है या बुरी अभी नहीं समझ पा रहा हूँ, लेकिन अभी आपको बता रहा हूँ। इस बात को आप अपने तक ही रखियेगा। मैं पत्नी व बच्चियों के संग एक साल के लिए अमेरिका का सब छोड़-छाड़ कर भारत वापस जा रहा हूँ..," हिमेश के इतना कहते ही रमिया स्तब्ध रह गई।

लगभग बारह साल से पारिवारिक दोस्ती है। हिमेश की पत्नी और रमिया में तथा रमिया के पति और हिमेश में गहरी छनती है.. रमिया को दो बेटे हैं तो हिमेश को दो बेटियाँ। हिमेश नौकरी के सिलसिले में अमेरिका आया। नौकरी व्यवस्थित होने पर शादी और समयानुसार दो बच्चियाँ हुई। हिमेश बहुत सालों से अपने माता-पिता को अपने संग अमेरिका में ही रखना चाह रहा था। भारत में माता-पिता के पास अन्य बच्चे भी थे देखभाल के लिए, परन्तु वृद्ध के लिए रस्साकस्सी शुरू हो गए थे। सभी हिमेश पर बराबर दबाव बना रहे थे कि वो भारत वापस आ जाये।

"क्या बेवकूफी वाली बात कर रहे हो मेरे दोस्त। तुम्हारी बच्चियाँ भारत में समझौता क्यों करें? देखो हमने निर्णय किया है कि जब ऐसा समय आयेगा कि हमारी जरूरत हमारे माता-पिता को होगी और वे यहाँ अमेरिका में आकर नहीं रहेंगे तो तीन महीना मैं जाकर रहूँगा और तीन महीना रमिया जाकर रहेगी।" रमिया के पति ने हिमेश को राह सुझाने की कोशिश किया।

"और आगे का छ महीना?" हिमेश उलझन में था।

"तब का तब और सोचेंगे...," रमिया ने कहा।

"तब का तब क्या तुम सेवा करने योग्य रह जाओगे? पिता का धन पुत्र को नहीं मिलता, भविष्य का कुछ सोचकर यह कानून बना होगा।" हिमेश की पत्नी गहरी तन्द्रा से जगी थी।

नेकी की मूर्ति

"दंग रह जाती हूँ, इस उम्र में भी सासु-माँ घर का सारा काम कर लेती हैं..! अपने शौक पूरा करने के लिए हौसला रखती हैं... दस लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत है! जब से वे हमारे पास रहने आई हैं.. मुझे तो मायके में रहने का सुख मिलने लगा है। शायद मायके से भी ज्यादा...। दादी-सासु जी और सासु-माँ को कभी साथ नहीं देख पायी। दादी-सासु जी भी इतना ही सहयोगी रही होंगी तभी न...," देर रात कार्यालय से लौटी नैनी अपने पति प्रभास से बोली।

"आओ अभी मेरी माँ से उनकी बहू होने के किस्से सुन लो.. जब तक मेरी नानी जीवित रही तभी तक मेरी माँ रानी रही..! "प्रभास नैनी को लेकर अपनी माँ के कमरे में पहुँच गया। उसकी माँ प्रतियोगिता में भेजने के लिए लघुकथा लेखन में उलझी हुई थी।

"बताइये न माँ जब आप बहू थीं तब क्या आपको इतना ही सुख था, जितना मुझे मिल रहा है ?" नैनी ने सास से पूछा।

"मेरी सासु-माँ की सासु-माँ सौतेली थीं.. वो ज़माना भी बहुत अलग था..! हमारे ज़माने कुछ अलग हुए लेकिन शिक्षा की कमी तो रही...। दर्द देने वाली पुरानी बातों को याद करने से खुद के ही जख्म हरे करने पड़ते हैं। मैं पूरी शिक्षित हूँ यह कैसे साबित हो सकेगा..। बदलते युग के साथ बेटियों का युग बदलना चाहिए। पहले बेटियाँ रोटी पकाती तो थीं खा नहीं पाती थी आज बेटियाँ रोटियाँ कमा लेती हैं... खाती पिज्जा बर्गर हैं। हर पीढ़ी में बेटियों की जिंदगी कंटीली झाड़ में खिले गुलाब सी होती है... और मैं एक बेटी को मिले कंटीली झाड़ को हटाने की कोशिश करती हूँ।" प्रभास को अपनी माँ बेहद खूबसूरत लग रही थीं।

"चलो माँ आज बाहर से आइसक्रीम खाने चलते हैं..।" प्रभास अपनी नम आँखें सबसे छुपाने में कामयाब रहता है।

छल

घर में प्रवेश करने और लैपटॉप-पुस्तकों वाले बैग रखने के ढ़ंग से उप-प्राचार्या बिटिया के पापा को एहसास हो गया कि बिटिया बहुत गुस्से में है। उसके गुस्से को शांत करने के प्रयास में पापा ने कारण पूछा और बिटिया ने जो अपने पापा को बताया...

दिल्ली में विभिन्न राज्यों के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का सेमिनार चल रहा था... एक ही शहर के दो विश्वविद्यालयों के कुलपति होने से वे दोनों पूर्व परिचित तो थे ही, सेमिनार के दौरान मित्रवत हो गये...। अपने शहर वापिस होने पर उनदोनों कुलपतियों का लगातार मिलना-जुलना चलता रहा..। राज रहने वाली बातें भी साझा होने लगी...। 'अ' विश्वविद्यालय के कुलपति का (जो बिटिया का महाविद्यालय था के) प्रधानाचार्य से सम्बंध अच्छे नहीं चल रहे थे... 'ब' विश्वविद्यालय के कुलपति 'स' महाविद्यालय के प्रधानाचार्य की शिकायतों/बुराइयों का गठरी खोले रहते... बहुत गंदे-गंदे शब्दों का प्रयोग कर लांछित करते थे... तथा साथ ही कहते, "जिस दिन उन्हें प्रधानाचार्य के पद से हटा दिया जायेगा उस दिन मेरे कलेजा को ठंढक पहुँचेगा..!"

कुछ महीनों के बाद 'स' महाविद्यालय के प्रधानाचार्य के निलंबन का पत्र आ जाता है। निलंबित होने की सूचना प्राप्त होते ही प्रधानाचार्य त्यागपत्र देते हैं और महाविद्यालय परिसर छोड़ देते हैं।

दो चार दिनों के बाद ही उनकी नियुक्ति 'ब' विश्वविद्यालय के अंतर्गत एक महाविद्यालय में हो जाती है तथा 'स' महाविद्यालय के

उप-प्राचार्या को 'ब' विश्वविद्यालय के कुलपति का फोन आता है कि अगर वो चाहेगी तो उसकी नियुक्ति भी..!

"जानते हैं पापा! मैं दंग तो नहीं हूँ.. लेकिन उनके चतुराई पर पहले बहुत गुस्सा आ रहा था, अब हँसी जरुर आ रही है...।"

"बिटिया! महोदय की यह चतुराई नहीं है, धुर्त्तई है। ऐसे हीं लोगों से दुनिया भरी हुई है। तुम्हें शायद अपने बचपन की बातें याद हो.. खेल-खेल में जयपुर से आई काठ की हांडी को चावल पानी डालकर चूल्हे पर चढ़ा दी थी।"

वशीकरण

"हमेशा अपने गाँव की प्रशंसा करती रहीं, अभी तो विदेश जाकर बहुत अच्छा लग रहा होगा! सब जगह साफ-साफ देखकर?" कई स्वर एक साथ गूंज रहे थे, फोन का स्पीकर ऑन था।

"क्या हमारे देश में स्वच्छता नहीं है.. और जहाँ ज्यादा स्वच्छता हो वहीं बस जाना चाहिए तो पूरा हिन्दुस्तान घूम चुके हों तो चूक गए अनेकों महानगरों की स्वच्छता देखने से? पहाड़ों की खूबसूरती भारत में ज्यादा है"

"जी मेरे कहने का मतलब यह था...,"

"आपके कहने का जो भी मतलब रहा हो, मेरे विचार पूरी तरह से स्पष्ट हैं, जिन्हें अपनी मिट्टी से प्रेम नहीं वे देश के गद्दार हैं.. ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसके लिए विदेश जाकर बसना हो। भारत में जो दान कर देने की शक्ति है, केवल दधीचि-कर्ण की बात नहीं अभी हाल में ही तीन सौ करोड़ में बिकने वाला होटल कैंसर अस्पताल को दान किया गया...,"

"क्या माँ! आप भी किससे विवाद कर रही हैं उनलोगों के वाणी-विवेक-विद्या में ताल-मेल ही नहीं।" श्रीमती सान्याल की बहू ने समझाने की कोशिश किया।

"माँ भी न! किसी बात को बहुत लंबा खिंचती हैं इतना लंबा तो च्यूंगम को नहीं खिंचता है। आप निश्चिंतता से रहें हम देश वापस जल्द लौट जायेंगे।" बेटे के आश्वासन से श्रीमती सान्याल को सबेरा ज्यादा चमकीला लग रहा था।

आग का छल्ला

(रिंग ऑफ फायर/ज्वालामुखी)

नागरिकता संशोधन अधिनियम के पक्ष/विपक्ष पर युवतियों-महिलाओं में चल रहे गर्मागर्म विचार-विमर्श के साथ चल रही किट्टी पार्टी में पूरी तन्मयता से पप्पी सबके थाली को पवित्रता प्रदान करने में भी लगा हुआ था।

लपलपाती जीभ और एक व्यंजन का स्वाद ग्रहण कर वह दूसरी सजी थाली की ओर बढ़ जाता। इस प्रकार वह कई चक्करों में प्राय सभी थालियों में सजे व्यंजनों का स्वाद ले चुका था...। किन्तु इससे वहाँ उपस्थित किसी सदस्य को कोई अन्तर नहीं पड़ रहा था।

मेजबान महोदया जिनके यहाँ यह पार्टी चल रही थी ने अपनी थाली में भी पप्पी द्वारा चखे व्यंजनों को नहीं बदला, अपितु प्रफुल्लित होते हुए पप्पी की प्रशंसा करते हुए सारी उपस्थिति को पप्पी की पॉटी के बारे में सगर्व बताने लगी कि एक दिन वह कुछ विलम्ब से घर पहुँची तो पप्पी की समझदारी देखकर अचम्भित रह गई थी बताने लगी कि,- "मेरे प्यारे पप्पी ने सोफे, किचन, बेडरूम को बचा दिया.. मुझे साफ करने में अधिक परेशानी न हो, इसलिए वह वाशिंग मशीन के कोने में जाकर फारिग हुआ..।"

"आपके माता-पिता कब आने वाले हैं..?" श्रीमती सान्याल ने पूछा जो अपनी थाली में अपनी उंगलियों को दोबारा जुम्बिश नहीं दे रही थीं.. हदप्रद हुई जब मेजबान पप्पी के पॉटी के बारे में विस्तार से बता रही थी।

"जब इस पिल्ले को घर के बाहर रखने लगेंगी...।" मेजबान की युवा बेटी ने हँसते हुए कहा।

"जरा आपलोग ही बताइए कि इसे कैसे बाहर रखूँ.. इसी की वजह से तो यहाँ अमेरिका में नागरिकता मिली है! इस देश के नियमानुसार जिस पिल्ले का जन्म यहाँ होता है उसको यहाँ की नागरिकता मिल जाती है।"

सारी उपस्थितियों में सन्नाटा बिखरा था और
ज़िहाल-ए मिस्कीं मकुन ब-रंजिश
ब हाल-ए-हिज्रा बेचारा दिल है..
का शोर गूंज रहा था...।

तम छटा

"महाशय! समझ में नहीं आया किस कारण विगत कुछ माह से आपकी संस्था क्षरम से वांछित सहयोग राशि प्राप्त नहीं हो पा रही है...?" साक्षी फाउंडेशन के सचिव ने क्षरम के कोषाध्यक्ष से शिकायत भरे लहजे में पूछा।

"हाँ! सहयोग राशि रोक दी गई है। इस सम्बंध में आपके विरुद्ध एक पत्र प्राप्त हुआ है!" कोषाध्यक्ष ने इत्मीनान से कहा।

"वो क्यों ? किस सम्बंध में? सचिव ने चौंकते हुए पूछा।

"क्या शिकायत आई है जरा मैं भी जान लूँ!" पुनः सचिव की उत्तेजक आवाज गूँजी

"अकस्मात् जो मंडली बाढ़ राहत सामग्री लेकर गई थी उसके...

धीमा जहर

सैन फ्रांसिस्को जाने के लिए फ्लाइट का टिकट हाथ में थामे पुष्पा दिल्ली अन्तरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर बैठी थी.. अपने कंधे पर किसी की हथेली का दबाव महसूस कर पलटी तो पीछे मंजरी को खड़े देखकर बेहद खुश हुई और हुलस कर एक दूसरे को आलिंगनबद्ध कर कुछ देर के लिए उनके लिए स्थान परिवेश गौण हो गया...

"बच्चें कहाँ हैं मंजरी और कैसे हैं? हम लगभग पन्द्रह-सोलह सालों के बाद मिल रहे हैं.. पड़ोस क्या बदला हमारा सम्पर्क ही समाप्त हो गया..,"

"मेरे पति के गुस्से ने हमारे-तुम्हारे पारिवारिक सम्बंध को बहुत प्रभावित किया उससे ज्यादा प्रभावित मेरे बच्चे के भविष्य को किया। आज ही हम लत संसाधन केंद्र में ध्रुव की भर्ती करवाकर आ रहे हैं।"मंजरी की आँखें रक्तिम हो रही थी।

"मेरे पति से नाराजगी की वजह भी तो तुम्हारे बेटे की उदंडता ही थी, घ्रुव की हर बात पर प्रधानाध्यापक को डाँटने विद्यालय चले जाना, नाई से अध्यापक का सर मुंडवा देना। मेरे बेटे को शिकायत करने के लिए उकसाने का प्रयास करना।"

" तुम्हारे और तुम्हारे पति हमेशा अपने बेटे को सीखाया कि गुरु माता-पिता से बढ़कर होते हैं। "स्पेयर द रॉड स्पॉइल द चाइल्ड" मंत्र ने तुम्हारे बेटे को अंग्रेजों के देश में स्थापित कर दिया।"

साहित्य का बढ़ता चीर

छोटी कलम को आज से चार साल पहले एक संस्था की जानकारी नहीं थी... हालांकि इक्कीस साल से उसी शहर की निवासी थी। आज पच्चीस साल हो जाने पर गली-गली में बस रहे छोटे-बड़े-बहुत बड़े कई संस्थानों को जानने की कोशिश में थी कि शोर से उलझन में हो गई...

"यह क्या साहित्य का विस्तार है... साहित्य तो लहूलुहान होने के स्थिति में है.. नाकाम इश्क की शायरी में बातें (शेर का बहर पूछ लो तो बगले झांकने लगते/लगती हैं,) चुटकुले, एक्टिंग, स्टोरी टेलिंग, गीत गाना, रैप.. कोई बताए रैप कौन सा साहित्य है? अरे हाँ मज़ेदार बात तो यह है कि ऐसे ओपन माइक्स में शामिल होने के लिए पैसे भी देने पड़ते हैं जो कि पुरी तरह मामले को व्यवसायिक बनाता है।" बड़ी कलम की संस्थाओं के मंच की आवाज गूँज रही थी।

"ठहरें! ठहरें! जरा ठहरें! क्या यहाँ कॉफी हाउस में, नुक्कड़ के चाय की दुकान पर जैसे साहित्य उफनता था और लहरें समेटने के लिए विद्यालय-महाविद्यालय के छात्र व राहगीर वशीभूत होकर वृत में जुट जाते थे वही हालात हैं क्या आज के... बड़े-बड़े महारथियों के जुटान में आलेख पढ़ने के एक-दो हजार से नाम पंजीयन करवाएं.. काव्य-पाठ के लिए चार सौ से आपको शामिल कर आप पर एहसान की जाएगी...!" opne mike(mic) पूरे विवाद करने का अवसर पा गया था..

"वरिष्ठ साहित्यकारों की देख-रेख में सीखना, गुण-दोष जान समझ, अनुशासन में बंध आगे बढ़ना और अत्यधिक श्रम से प्रसिद्धि

हासिल करना ही श्रेयस्कर होगा।" छोटी कलम दोनों को सांत्वना दे रही थी।

"जाओ! जाओ! यहाँ गुटबंदी कुनबे के साम्राज्य में कोई एक गुरू मिल गया तो सबके खुन्नस की शिकार हो जाओगी!" बड़ी कलम की संस्थाओं के मंच और opne mike(mic) की आवाज संग-संग गूँज गई।

"इन लोगों ने चींटी से कुछ नहीं सीखा!" मुस्कुरा रही थी छोटी कलम

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

१३ दिसम्बर २०१६ को जब मैं पटना से कैलिफोर्निया आई तो दूर-दूर तक अंदेशा नहीं था कि विदेश आकर कोरोना-काल की कैदी बनने जा रही हूँ। फरवरी २०२० तक गम्भीर स्थिति का एहसास हो गया और १ मार्च २०२० से मैंने अपने को पूरी तरह कैद पाया।

स्वर्ग और नर्क धरा पर भोगना तय है यह तो सदा सुनने को मिलता रहा.. आज अनुभव में भी है..। यह अलग बात है कि गेंहू के साथ घुन का पीसना भी चरितार्थ हो रहा है। पचास साल पूरे हो गए धरा-दिवस मनाते हुए, जिनकी चेतना नहीं जगनी थी तो नहीं जगी.. जो जगे थे वे भी कट रहे हैं।

पतंगों सी जिंदगी कि सटे तो कटे में यह उदास सा माहौल हमारे लिए वर्षों का हो गया है। अतः जितना जल्दी इसे स्वीकार कर उबर जाएं, उतना हमारे लिए और आस-पास के लिए एक साकारात्मक ऊर्जा का विस्तार होगा तथा हमारे हाथ में है कितना यह भी विचारणीय है। ऐसे में शब्द-प्रबंधन व साहित्य सृजन का महत्व समझ में आया और अन्तरा शब्दशक्ति का हमें उत्साहित करने के लिए नित्य नव प्रयास सार्थक सहायक रहा। आज की तिथि में जब हर पल अनिश्चिंतता में गुजर रहा है तो नहीं जानती कि मेरी भारत वापसी होगी कि नहीं.. जब तक चारों ओर से लॉकडाउन खत्म नहीं हो जाता.. इंसान बने रहना है..जीवन और मृत्यु एक सिक्के के दो पहलू है.. एक है तो दूसरा होगा ही.. आज या कल यह तो नहीं पता लेकिन मौत के पहले मौत की कल्पना करते हुए और सांत्वना में जीते हुए नहीं गुजारना चाहते हम.. वक्त ने अपनो को बहुत छीना है अल्पायु में.. मेरा शरीर ही ले जाएगा.. मुझे जानने वाले इतने हैं कि मेरा नाम कहाँ ले जाएगा... वैसे मेरा फलसफा सदा है जीने का तरीका भी.. बस.. इसी पल भर है जिंदगी अन्तरा शब्दशक्ति ने लगातार सृजन जारी रखने के लिए सृजन से सबको जोड़े रखा अतः हम सदा आभारी रहेंगे।

रचनाकार
विभा रानी श्रीवास्तव
'दन्तमुक्ता'

८०६, फॉण्ट terr
सेन हॉजे केलिफोर्निया

Email- vrani.shrivastava@gmail.com
Mobile - 1(408)439-4670

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क - 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-185-5

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/